पाठ 5

इब्राहीम गार्दी

8DP75G

– श्री वृंदावन लाल वर्मा

इतिहास के सन्दर्भ से साहित्य को सरलता के साथ प्रस्तुत करने वाले प्रसिद्ध साहित्यकार श्री वृंदावन लाल वर्मा की यह कहानी अपने सन्दर्भ में व्यापक और मानवीय जीवन मूल्यों को लेकर बेहद प्रासंगिक है। मराठा सेनापति इब्राहीम गार्दी घायल अवस्था में शत्रुओं के कैद में रहने के बाद भी अपने प्राणों का भय छोड़कर उन मूल्यों और मान्यताओं पर प्रश्न खड़ा करता है जो किसी भी मज़हब और ज़बान को संकीर्णता के दायरे में बाँध कर देखने के आदी हैं। शरीर के टुकड़े – टुकड़े होते रहे पर इब्राहीम का यह बेखौफ जवाब "तौबा करें वे लोग जो कैदियों, घायलों, निहत्थों का कत्ल करते हैं" ये उसकी इंसानी जज़्बे को दर्शाता है।

सन् 1761 में पानीपत के युद्ध में अहमदशाह अब्दाली से मराठे हार गए। मराठों का सेनापति इब्राहीम गार्दी बंदी हुआ। वह अंत तक लड़ता रहा और घायल हो जाने के कारण पकड़ लिया गया। उस युद्ध में अवध का नवाब शुजाउद्दौला अहमदशाह अब्दाली की ओर से लड़ा था। घायल इब्राहीम गार्दी को शुजाउद्दौला के टीले में, जो अफगान शाह अब्दाली की छावनी के भीतर ही था, पकड़कर रख लिया गया। अब्दाली को इब्राहीम के नाम से घृणा थी। इब्राहीम के पकड़े जाने और शुजाउद्दौला के टीले में होने का समाचार उसको मिल चुका था। इसलिए उसने इब्राहीम को अपने सामने पेश किए जाने के लिए शुजाउद्दौला के पास दूत भेजा।

शुजाउद्दौला इब्राहीम गार्दी की उपस्थिति से इंकार न कर सका।

उसने अनुरोध किया, "इब्राहीम काफी घायल हो गया है, अच्छा हो जाने पर पेश कर दूँगा।"

दूत ने अपने शाह का आग्रह प्रकट किया, "उसको हर हालत में इसी पल जाना होगा।"

शुजाउद्दौला का प्रतिवाद क्षीण पड़ गया। फिर भी उसने कहा, ''इब्राहीम मराठों के दस हजार सिपाहियों का सेनापति था। इस समय वह घायल पड़ा हुआ है। कम–से–कम इस वक्त तो उसे नहीं बुलाना चाहिए।''

दूत नहीं माना। उसको अहमदशाह अब्दाली का स्पष्ट आदेश था। शुजाउद्दौला को उस आदेश का पालन करना पड़ा।

अहमदशाह के सामने इब्राहीम गार्दी लाया गया।

अहमदशाह ने पूछा, ''तुम मराठों की दस हजार पलटनों के जनरल थे?''

उसने उत्तर दिया, ''हाँ, था।''

''पहले तुम फ्रांसीसियों के नौकर थे?''

''जी हाँ।''

''फिर हैदराबाद के निज़ाम के यहाँ नौकर हुए?''

''सही है।''

''तुमने निज़ाम की नौकरी क्यों छोड़ दी?''

''क्योंकि निज़ाम के रवैये को मैंने अपने उसूल के खिलाफ पाया।''

''तुमने फिरंगी ज़बान भी पढ़ी है?''

''जी हाँ।''

''मुसलमान होकर फिरंगी ज़बान पढ़ी ? फिर मराठों की नौकरी की? खैर, अब तक जो कुछ तुमने किया, उस पर तुमको तौबा करनी चाहिए। तुमको शर्म आनी चाहिए।'' घाव की परवाह न करते हुए इब्राहीम बोला, ''तौबा और शर्म! आप क्या कहते हैं, अफगान शाह? आपके देश में अपने मुल्क से मुहब्बत करने और उस पर जान देनेवालों को क्या तौबा करनी पड़ती है? और क्या उसके लिए सर नीचा करना पड़ता है?''

''जानते हो तुम इस वक्त किसके सामने हो और किससे बात कर रहे हो ?'' अहमदशाह ने कठोर वाणी में कहा।

''जानता हूँ। और न भी जानता होता तो जान जाता। पर यह यकीन है कि आप खुदा के फरिश्ते नहीं हैं।''

''इतनी बड़ी फतह के बाद मैं गुस्से को अपने पास नहीं आने देना चाहता। मुझे ताज्जुब है, मुसलमान होकर तुमने अपनी जिंदगी को इस तरह बिगाड़ा।''

''तब आप यह जानते ही नहीं हैं कि मुसलमान कहते किसको हैं। जो अपने मुल्क के साथ गद्दारी करे, जो अपने मुल्क को बरबाद करनेवाले परदेशियों का साथ दे, वह मुसलमान नहीं।''

''मुझको मालूम हुआ है कि तुम फिरंगियों के कायल रहे हो। उनकी शागिर्दी में ही तुमने यह सब सीखा है। क्यों ? क्या तुम नमाज़ पढ़ते हो?''

''हमेशा, पाँचों वक्त।''

अहमदशाह के चेहरे पर व्यंग्य भरी मुस्कुराहट आई और आँखों में क्रूरता। बोला, ''फिरंगी या मराठी ज़बान में नमाज़ पढ़ते होगे।''

इब्राहीम ने घावों की पीड़ा दबाते हुए कहा, ''खुदा अरबी, फारसी या पश्तो ज़बान को ही समझता है क्या? वह मराठी या फ्रांसीसी नहीं जानता? क्या खुदा राम नहीं है और क्या राम और रहीम अलग–अलग हैं?''

अहमदशाह का चेहरा क्रोध से तमतमा उठा। बोला, ''क्या कुफ्र बकता है? तौबा करो, नहीं तो टुकड़े–टुकड़े कर दिए जाओगे।''

''मेरे इस तन के टुकड़े हो जाने से रूह के टुकड़े तो होंगे नहीं।'' इब्राहीम ने शान्त किन्तु दृढ़ स्वर में कहा।

घायल इब्राहीम के ठंडे स्वर से अहमदशाह की क्रूरता कुछ कम हुई। एक क्षण सोचने के बाद बोला, ''अच्छा, हम तुमको तौबा करने के लिए वक्त देते हैं। तौबा कर लो तो हम तुमको छोड़ देंगे। अपनी फौज में नौकरी भी देंगे। तुम फिरंगी तरीके पर कुछ दस्ते तैयार करना।''

कराह को दबाते हुए इब्राहीम के ओठों पर झीनी हँसी आई। अहमदशाह की उस खिलवाड़ को इब्राहीम समाप्त करना चाहता था। उसने कहा, ''अगर छूट जाऊँ तो पूना में ही फिर पलटनें तैयार करूँ और फिर इसी पानीपत के मैदान में उन अरमानों को निकालूँ जिनको निकाल न पाया और जो मेरे सीने में धधक रहे हैं।''

''अब समझ में आ गया तुम असल में बुतपरस्त हो।''

''जरूर हूँ, लेकिन मैं ऐसे बुत को पूजता हूँ जो दिल में बसा हुआ है और ख्याल में मीठा है। जिन बुतों को बहुत–से लोग पूजते हैं, और आप भी, मैं उनको नहीं पूजता।''

''हम भी? खबरदार।''

''हाँ, आप भी। हर तंबू के सामने मरे हुए सिपाहियों के सरों के ढेर के इर्द–गिर्द जो आपके पठान और रुहेले सिपाही नाच–नाचकर जश्न मना रहे हैं, वह सब क्या है? क्या वह बुतपरस्ती नहीं?''

''हूँ, तुम बदज़बान भी हो। तुम्हारा भी वही हाल किया जाएगा, जो तुम्हारे सदाशिवराव भाऊ का हुआ है।''

चकित इब्राहीम के मुँह से निकल पड़ा, ''क्यों, उनका क्या हुआ?''

उत्तर मिला, ''मार दिया गया, सर काट लिया गया।''

''उफ़'', घायल इब्राहीम ने दोनों हाथों से सर थामकर कहा।

अब्दाली को उसकी पीड़ा रुची। बोला, ''तुम लोगों का खूबसूरत छोकरा विश्वास राव भी मारा गया।''

इब्राहीम की बुझती हुई आँखों के सामने और भी अँधेरा छा गया। उसने कुपित स्वर में कहा, ''विश्वास राव! मेरे मुल्क का ताज़, मेरे सिपाहियों के हौसलों का ताज़। उफ़!''

इब्राहीम गिर पड़ा।

अहमदशाह उसके तड़पने पर प्रसन्न था। उसकी निर्ममता ने सोचा, ''शहीदी को जीत लिया।''

इब्राहीम ज़रा–सा उठकर भरभराते हुए स्वर में बोला, ''पानी।''

अब्दाली कड़का, ''पहले तौबा कर।''

''तौबा करें वे लोग जो कैदियों, घायलों, निहत्थों का कत्ल करते हैं।''

अब्दाली से नहीं सहा गया। इब्राहीम भी नहीं सह पा रहा था।

अब्दाली ने उसके टुकड़े–टुकड़े करके वध करने की आज्ञा दी।

एक अंग कटने पर इब्राहीम की चीख में से निकला, ''मेरे ईमान पर पहली नियाज़।'' दूसरे पर क्षीण स्वर में निकला, ''हम हिंदू–मुसलमानों की मिट्टी से ऐसे सूरमा पैदा होंगे, जो वहशियों और ज़ालिमों का नामोनिशान मिटा देंगे।''

और फिर अंत में मराठों के सेनापति इब्राहीम खाँ गार्दी के मुँह से केवल एक शब्द निकला, 'अल्लाह'।

शब्दार्थ :– **बुतपरस्त**– मूर्तिपूजक, **शागिर्दी**–शिष्यत्व, **कुफ्र**–इस्लाम मत से भिन्न या अन्य मत, नास्तिक, **तौबा करना**–पश्चाताप, प्रयाश्चित, **ताज्जुब**–आश्चर्य, विस्मय, **फिरंगी**–अंग्रेज, **जबान**–भाषा, **इर्दगिर्द**–आसपास, **नियाज**–इच्छा, कांक्षा, प्रयोजन, जरूरत, **बदजबान**–बुरा बोलनेवाला, कटूभाषी, **निर्मम**–ममता का अभाव, हृदयहीन, **अमानत**–धरोहर, **जालिम**–जो बहुत ही अन्यायपूर्ण या निर्दयता का व्यवहार करता हो जुल्म करनेवाला, अत्याचारी।

अभ्यास

पाठ से

1. इब्राहीम गार्दी कौन था? उसने किस युद्ध में भाग लिया था?
2. अहमदशाह अब्दाली इब्राहीम से घृणा क्यों करता था?
3. पानीपत का युद्ध कब हुआ था और किस–किस के बीच हुआ था?
4. शुजाउद्दौला इब्राहीम को अब्दाली के समक्ष उसी समय क्यों नहीं पेश करना चाहता था?
5. किसके मारे जाने पर इब्राहीम गार्दी दुखी हुआ ?
6. इब्राहिम गार्दी के नजरिए में मुसलमान कौन है ?
7. अपने जख्मों की पीड़ा को दबाते हुए इब्राहिम ने अब्दाली को क्या उत्तर दिया ?
8. अब्दाली ने इब्राहीम गार्दी को क्या सज़ा दी ?
9. कहानी से वाक्य चुनकर लिखिए जिनसे इस्लाम धर्म की विशेषताएँ प्रकट होती हों।
10. यदि अपनी जान बचाने के लिए इब्राहीम तौबा कर लेता तो आप उसके संबंध में क्या राय बनाते?
11. इब्राहीम गार्दी के गुणों को शीर्षकों के रुप में लिखिए।
12. किसने कहा? किससे कहा?
    क. ''इस समय वह घायल पड़ा है?''
    ख. ''मुसलमान होकर फ़िरंगी जबान पढ़ी। फ़िर मराठों की नौकरी की।''
    ग. ''जो अपने मुल्क को बरबाद करनेवाले परदेशियों का साथ दे वह मुसलमान नहीं।''
    घ. ''मेरे इस तन के टुकड़े हो जाने से रूह के टुकड़े तो होंगे नहीं।''
    ङ. ''हम हिंदू–मुसलमानों की मिट्टी से ऐसे सूरमा पैदा होंगे, जो वहशियों और ज़ालिमों का नामोनिशान मिटा देंगे।''

पाठ से आगे

1. इस पाठ में इस्लाम धर्म का उल्लेख है। आप, सभी धर्मों के उन पहलुओं को आपस में चर्चा कर लिखिए जो सभी में समान रूप से पाए जाते हैं।

8DY374

2. मराठों के सेनापति इब्राहीम के जीवन के वे कौन–कौन से पहलू हैं जो उन्हें धर्म की सभी सीमाओं से ऊपर उठाकर एक नेक इंसान के रूप में प्रतिष्ठित करते हैं? चर्चा कर लिखिए।
3. धर्म/मज़हब/पंथ का वास्तविक स्वरूप कभी भी हमारी राष्ट्रीयता में बाधक नहीं है। इस विषय पर आपस में विचार कर इसके पक्ष और विपक्ष में तर्कों को लिखिए।
4. इस पाठ में इस्लाम धर्म के दो नज़रिये आपको पढ़ने और समझने को मिलते हैं, वे क्या है? दोनों में से कौन सा नज़रिया महत्वपूर्ण जान पड़ता है और क्यों? मित्रों से चर्चा कर लिखिए।

भाषा से

1. पाठ से लिए गए निम्नलिखित समानार्थी शब्दों के परस्पर जोड़े बनाइए –

विदेशी या गोरा	पेश	फौजी	पड़ाव	नफ़रत
हाज़िर करना	पलटन	छावनी	घृणा	कमज़ोर
शरीर	मूर्ति	फिरंगी	क्षीण	हत्या
बुत	आज्ञा	जश्न	अरमान	कत्ल
आदेश	तन	इच्छा	उत्सव	

2. पाठ में बहुत से विदेशज शब्दों के प्रयोग हुए हैं। इनका हिंदी में समान अर्थ देने वाले शब्दों को लिखिए–तौबा, मुल्क, फ़तह, यकीन, ज़बान, शागिर्दी, शर्म, वक्त, अरमान, बुतपरस्त, बदज़बान, वहशी, ज़ालिम।
3. एक विचार को पूर्ण रूप से प्रकट करने वाला शब्द–समूह वाक्य कहलाता है। इसके तीन पद हैं। उद्देश्य, विधेय और क्रिया। जैसे – अहमदशाह के सामने इब्राहीम गार्दी लाया गया। पूर्व के पाठों में भी वाक्य के बारे में चर्चा हुई है, जहाँ वाक्यों की संरचना के आधार पर वाक्यों के भेद बताए गए हैं –

   सरल वाक्य – जिस वाक्य में एक ही उद्देश्य (कर्ता) और एक ही सहायक क्रिया हो, वह साधारण वाक्य है जैसे –इब्राहीम गार्दी मराठों का सेनापति था।

   मिश्र वाक्य किसी विषय पर पूर्ण विचार प्रकट करने के लिए कई साधारण वाक्यों को मिलाकर एक वाक्य की रचना करनी पड़ती है। इन वाक्यों में एक मुख्य या प्रधान उपवाक्य और एक अथवा अधिक आश्रित उपवाक्य होते हैं, जो मुख्य उपवाक्य की पुष्टि, समर्थन, स्पष्टता या विस्तार के लिए आते हैं। जैसे 'तब आप जानते ही नहीं हैं, कि मुसलमान कहते किसको हैं। जो अपने मुल्क के साथ गद्दारी करे जो अपने मुल्क को बर्बाद करने वाले परदेशियों का साथ दे, वह मुसलमान नहीं।'

8E7Y8R

संयुक्त वाक्य में दो से अधिक साधारण वाक्य 'पर, किन्तु, और, या' इत्यादि से जुड़े होते हैं। जैसे–अहमदशाह के चेहरे पर व्यंग्य भरी मुस्कुराहट आई और आँखों में क्रूरता। **पाठ में आए इसी तरह के सरल, मिश्र व संयुक्त वाक्यों की पहचान कीजिए।**

4. पाठ में हम देखते हैं कि अब्दाली और इब्राहीम के बीच के बातचीत में काफ़ी सवाल हैं–
   - तुमने निज़ाम की नौकरी क्यों छोड़ दी ?
   - जानते हो इस वक्त तुम किसके सामने हो और किससे बात कर रहे हो ?
   - तुमने फ़िरंगी ज़बान भी पढ़ी है ?
   - क्या खुदा राम नहीं है और क्या राम और रहीम अलग–अलग हैं ?

   उपर्युक्त वाक्यों को पढ़ने से स्पष्ट होता है कि प्रश्न वाचक वाक्य हम कैसे बनाते हैं। (जिस वाक्य में कोई प्रश्न पूछा गया हो अथवा प्रश्न पूछने का भाव हो तथा अंत में प्रश्न वाचक चिह्न (?) का प्रयोग हो।) इन वाक्यों में क्या, कब, क्यों कहाँ, कब आदि शब्दों का प्रयोग होता है।

   पाठ से प्रश्न वाचक वाक्यों को खोज कर लिखिए साथ ही कुछ साधारण वाक्यों का चुनाव कर प्रश्नवाचक वाक्यों का निर्माण कीजिए।
5. 'धर्म की कट्टरता हानिकारक है'– इस विषय पर बीस वाक्यों का एक निबंध लिखिए।
6. इस पाठ में लगे उद्धरण चिह्नों–वाले (" ") चार वाक्यों को लिखिए। यह भी लिखिए कि उक्त चिह्न कब और कहाँ लगाए जाते हैं?

योग्यता विस्तार

1. पानीपत कहाँ है? इतिहास में इस स्थान का क्या महत्व है ? इस विषय पर समूह चर्चा कर अपने–अपने विचार लिखिए और कक्षा में सुनाइए।
2. ऐतिहासिक विषय पर आधारित श्री हरि कृष्ण प्रेमी की एकांकी, राखी की लाज, और डॉ. रामकुमार वर्मा की एकांकी दीपदान जैसी रचनाएँ खोज कर पढ़िए।
3. 'राखी की लाज' शीर्षक एकांकी (रचनाकार– श्री हरिकृष्ण प्रेमी) खोजकर पढ़िए। तथा उस एकांकी में मेवाड़ की महारानी और बादशाह हुमायूँ के धर्म संबंधी विचारों पर कक्षा में चर्चा कीजिए।